PEER-REVIEWED REFEREED JOURNAL
ISSN 2231-0479 SAMAGAM
RNI MPHIN/2000/02531
Po.Reg. MP/BPL/4-188/2022-24

अगस्त-2022 । मूल्य पचास रुपये । 15 तारीख को प्रकाशित । पृष्ठ संख्या 48

समागम

शोध एवं संदर्भ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

जरा, याद करो कुर्बानी

मनोज कुमार
सम्पादक
प्रो. (डॉ.) विशाला शर्मा
सहयोगी सम्पादक

विषय- विशेषज्ञ

प्रोफेसर के.जी. सुरेश
कुलपति
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

प्रो. (डॉ.) सुधीर गव्हाणे
पूर्व कुलपति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय तथा एमजीएम विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

जगदीश उपासने
अध्यक्ष, प्रसार भारती भर्ती बोर्ड, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी
महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली

प्रो. (डॉ.) च्यांग चिंग खुई
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बीजिंग विश्वविद्यालय, चीन

विवेक मणि त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर (भारत अध्ययन) क्वान्तौंग विदेशी भाषा विवि, चीन

आशुतोष देशमुख
फिल्म अध्यापन एवं प्रबंध, रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान, मॉरीशस विश्वविद्यालय

डॉ. सोनाली नरगुंदे
विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

डॉ. आरफा राजपूत
एसोसिएट प्रोफेसर, सिनेमा संकाय जी फिल्म स्कूल, नोएडा, यूपी

पुष्पेन्द्रपाल सिंह
सम्पादक, रोजगार निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

आकल्पन : अपूर्वा

दत्ता कोल्हारे
सहयोगी समन्वयक (अवैतनिक)

http://samagamresearchjournal.com/
peer-reviewed (refereed) journal

ISSN 2231-0479

समागम

अंतर्राष्ट्रीय मानक की शोध एवं संदर्भ की मासिक पत्रिका

वर्ष-22
अंक-07
अगस्त-2022

भीतर के पन्नों पर

हस्तक्षेप 5-8
- आजादी यूं नहीं मिली, जरा, याद करो कुर्बानी

विमर्श :आजादी का अमृत महोत्सव 9-14
- अमृतकाल और युवा भारत की चुनौतियां
- आजादी के बाद प्रिंट मीडिया का बदला स्वरूप
- हर मन का उत्सव, आजादी का अमृत महोत्सव

अनकही 15-17
- आजाद का बलिदान : सुखदेवराज की जबानी

शोध विमर्श 18-46
- भारतीय पत्रकारिता : स्वतंत्रता आंदोलन की सहचरी
- तुलसीदास के रामचरित मानस में राम का स्वरूप
- कबीर का काव्य-दर्शन : विशद् विवेचन
- मीडिया के दौर में साहित्य का अस्तित्व
- राष्ट्रीय एकता और देवनागरी लिपि
- ग्रामीण पत्रकारिता : गांवों की खबरें
- अभिव्यक्ति की कुलबुलाहट : अंधेर नगरी
- निर्बलतम के गीत गाती अरुण कमल की कविता
- सुर बंजारन उपन्यास में लोक साहित्य और संस्कृति
- **Bagavad Geeta and it's Scientific relevance to modern society**

सदस्यता : वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र ▸ वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 1 हजार रुपये मात्र

सम्पर्क : 3, जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल- (मप्र) 462016 E-mail:samagam2016@gmail.com

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक कृति अग्रवाल द्वारा 3, जू. एमआईजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल से प्रकाशित एवं तारा ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-4, जोन वन एमपी नगर भोपाल से मुद्रित. "सम्पादक- मनोज कुमार" अवैतनिक मानसेवी . प्रकाशित सामग्री के लिए सहमति अनिवार्य नहीं. विषय विशेषज्ञ अवैतनिक एवं समस्त वैधानिक जवाबदेही से मुक्त

शोध विमर्श

निर्बलतम के गीत गाती अरुण कमल की कविता

डॉ. संजय रणखांबे
सहयोगी प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष
डॉ. अण्णासाहेब जी. डी. बेंडाले
महिला महाविद्यालय, जलगांव

शोध सार : प्रस्तुत शोधालेख में कवि अरुण कमल के 'मैं वो शंख महाशंख' और हालिया प्रकाशित 'योगफल' इन दो काव्य-संग्रहों की समाज के निर्बलतम वर्ग के जीवन पक्षों को अभिव्यक्त करती कविता का विवेचन किया गया है। अरुण कमल जी की इन दोनों संग्रह की कविताओं में समाज के उपेक्षित, वंचित, शोषित, निर्बल वर्ग का यथार्थ चित्रण किया है। वे अपनी कविता के माध्यम से इन लोगों का पक्ष लेकर व्यवस्था से लड़ने के लिए भी तैयार है। कवि की इस जनपक्षधरता तथा संघर्षशीलता को भी इस शोधालेख के जरिए रेखांकित किया है। पूंजीवादी-व्यवस्था द्वारा हमेशा से समाज के निर्बलतम तबके की उपेक्षा की जाती है, कवि अरुण कमल जी की कविता में मौजूद इस वर्ग की उपेक्षित जिंदगी के कई चित्रों को इस शोधालेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। लोकतांत्रिक देश में निर्बल वर्ग के नाम पर भले ही योजनाएं बनती हो परंतु राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था की मिलीभगत से वे योजनाएं पूंजीपतियों द्वारा हथिया ली जाती है। इस सच्चाई को भी अरुण कमल की कविता के माध्यम से इस शोधालेख में उद्घाटित करती है।

शब्द संकेत : निर्बलतम, पूंजीवादी-व्यवस्था, संघर्षशीलता, शोषण, जनपक्षधरता, मेहनतकश, श्रमजीवी, लोकतांत्रिक, विषमतावादी-व्यवस्था।

पूंजीवादी-व्यवस्था द्वारा हमेशा से समाज के निर्बलतम तबके की उपेक्षा की जाती है, कवि अरुण कमल जी की कविता में मौजूद इस वर्ग की उपेक्षित जिंदगी के कई चित्रों को इस शोधालेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। लोकतांत्रिक देश में निर्बल वर्ग के नाम पर भले ही योजनाएं बनती हो परंतु राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था की मिलीभगत से वे योजनाएं पूंजीपतियों द्वारा हथिया ली जाती है।

प्रस्तावना : समकालीन कविता के अंतर्गत 90 के दशक से अब तक निरंतर काव्य-सृजन से जुड़े जनपक्षधर कवि अरुण कमल जी के अब तक पांच काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'अपनी केवल धार' इस पहले काव्य-संग्रह से उन्होंने अपनी जनपक्षधरता घोषित की और पांचवें संग्रह 'योगफल तक बरकरार है। अपनी कविता के माध्यम से कवि अरुण कमल ने समाज के शोषित, पीड़ित और असहाय मेहनतकश या श्रमजीवी वर्ग का पक्ष लेते हुए उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। इस शोधालेख के लिए उनके 'मैं वो शंख महाशंख' और 'योगफल' इन दो शब्दों का चयन किया गया है।

कवि अरुण कमल अपनी कविता के माध्यम से समाज के निर्बल लोगों का चित्र अंकित करते हैं। कविता का दायित्त्व प्रतिपादित करते हुए अरुण कमल ने लिखा है- 'कविता निर्बलतम का पक्ष है। जिसका कोई नहीं उसकी कविता है। जो सबसे कमजोर, दलित और असहाय है उसका बल है।'[1] समाज का निर्बल वर्ग वह कहलाता है जो आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से कमजोर हैं, जो पूंजीवादी-व्यवस्था द्वारा किसी-न-किसी तरह से शोषित, पीड़ित और असहाय है। इस दृष्टि से अरुण कमल की कविता में आर्थिक दृष्टि से निर्बल वर्ग के जीवन के कई पक्ष हमें देखने के लिए मिलते हैं। समाज का निर्बल वर्ग मतलब मेहनत, मजदूरी करने वाला मजदूर, किसान है। 'मैं वो शंख महाशंख' संग्रह की पहली ही 'जनगणना' शीर्षक कविता में जो एक अंक है, जो शंख या महाशंख है वह समाज का उपेक्षित, वंचित, निर्बल जन है। गणना में जो सबसे अंत में होता है, वह निर्बलतम जन होता है। पूंजीवादी-व्यवस्था द्वारा

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

जिसके पास पूंजी है वह ऊंची श्रेणी में आता है, वह अमीर कहलाता है और जो निर्धन है, गरीब है, निर्बल है वह अंत में आता है। उसे गिनती में भी नहीं रखा जाता। शंख- महाशंख यह एक गणना परिमाण है। जैसे दशक, शतक, सहस्त्र, लक्ष, दशलक्ष, करोड़, शंख, महाशंख आदि। कवि राजेश जोशी इसे 'इत्यादि।'[2] कहते हैं। अर्थात् लोकतांत्रिक देश में इस निर्बल वर्ग के नाम पर भले ही कई योजनाएं बनती हो परंतु उसका सारा लाभ पूंजीवादी ताकतें ही उठाती है। पूंजीवादी व्यवस्था द्वारा सारी योजनाएं, गतिविधियां केवल उच्च वर्ग के हित को ध्यान में रखकर संचालित की जाती है, अमल में लायी जाती हैं। इन योजनाओं में इस निर्बल जन के लिए कोई स्थान नहीं होता। जनगणना करते समय भी उसकी गिनती की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। कवि अरुण कमल ने व्यवस्था द्वारा इस जन की उपेक्षा की नीति का सत्य उद्घाटित करते हुए लिखा है- 'मैं वो हूं जिसकी गिनती होने से रह गई/ पूरी आबादी में जो एक कम होगा वो मैं हूं/ जिसके वास्ते किसी अदहन में डाला नहीं जाएगा चावल / जिसके नाम की रोटी नहीं पकेगी वो मैं हूं / वो मैं हूं मैं वो अंक वो शंख महाशंख।'[3] इस निर्बल जन के लिए व्यवस्था किसी भी तरह की योजनाएं उस तक पहुंचने नहीं देती। अर्थात् कवि कहना चाहते हैं कि पूंजीवादी-व्यवस्था में निर्बल जन के लिए कोई स्थान नहीं है। उसके लिए 'चावल' और 'रोटी' तक की व्यवस्था न होने का अर्थ यह है कि जितनी भी योजनाएं पूंजीवादी-व्यवस्था द्वारा संचालित की जाती है, उनमें केवल ऊंचे या पूंजीपतियों का हित होता है।

निर्बल जन पराधीनता में अपना जीवन-यापन करने के लिए विवश है। वह अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी पूंजीपतियों पर निर्भर है। पूंजीवादी-व्यवस्था इसी कारण इनका शोषण करती हैं। इस व्यवस्था द्वारा उस पर अन्याय, अत्याचार किए जाते हैं। अपनी व्यवस्था को बरकरार रखने के लिए यह विषमतावादी व्यवस्था इस निर्बल जन पर अपना खौफ, डर बना कर रखना चाहती है। इसी कारण यह जन निरंतर भय या डर के साए में अपनी जिंदगी यापन करता है। निर्बल जन के इस डर को व्यक्त करते हुए अरुण कमल ने लिखा है -'मैं जी रहा हूं एक एक सांस गिनता/ अभी अगले पल कुछ भी हो सकता है / मेरी नाव डूब रही है मेरा घर गिर रहा है / मेरा रास्ता रसद पानी बंद / मेरे पैरों के नीचे फट रही है धरती / मैं डूब रहा हूं।'[4]

जीवन के कटु अनुभवों ने इस निर्बल जन को यह सिखा दिया है कि इस जीवन में उसे उसकी अवस्था के साथ तब तक जिंदा रहना है जब तक सांस चलती है। वह किसी से कोई उम्मीद नहीं रखता। उसे किसी का आश्रय या सहारा नहीं है। उसकी दयनीय अवस्था का यथार्थ चित्रण करते हुए कवि ने लिखा है -'जीता रहूंगा / उस पेड़ की तरह जिस पर ठनका गिरा / उस कुत्ते की तरह जिसकी देह में खौरा है / उस पक्षी की तरह जिसके पंख झड़ रहे हैं / मैं एक टूटी सड़क की तरह जिंदा रहूंगा / एक सूखी नदी की तरह अगले आषाढ़ तक।'[5] इस तरह से कवि अरुण कमल ने निर्बल वर्ग की असहायता का चित्रण किया है।

इन निर्बल जन समूह में अस्पताल में सेवा-सुश्रुषा का काम करने वाला 'सेवक' भी एक है। वह मरीजों के बीच रहकर अपने संवेदनशील मन के कारण बेतहाशा बेचैन रहता है। किसी भी स्थिति में वह अपना काम छोड़कर दूसरा काम करना चाहता है। परंतु व्यवस्था इस निर्बल जन के लिए कोई विकल्प नहीं रखती ही नहीं। हर निर्बल जन अपना चला आ रहा काम करने के लिए विवश है। वह हिम्मत कर कोशिश करें तो भी कह नहीं सकते कि उसे कोई अन्य काम मिले। निर्बल जन की इसी विवशता को चित्रित करते हुए कवि अरुण कमल ने अपनी 'सेवक' कविता में लिखा है - 'कई बार मन में बांधा कोई और काम खोजूंगा / स्कूल की दरबानी या बच्चों का रिक्शा हाकूंगा / पर धीरे-धीरे ऐसा समय आता है / जब सारे रास्ते पानी में डूब जाते हैं/ जब तुम्हारा सोचा कुछ नहीं होता।'[6] पूंजीवादी व्यवस्था अपना शोषण चक्र बरकरार रखने के लिए कई हथखंडे अपनाता है और जो जिस व्यवस्था में फंसा है, उसे वहां से निकलने के सारे रास्ते नियम, अनुभव आदि शर्तों के आधार पर बंद करता है।

निर्बल जन अर्थात् मेहनतकश, श्रमजीवी वर्ग अपने आर्थिक अभाव के कारण शहरों में अत्यंत दयनीय स्थिति में जिंदगी व्यतीत करने के लिए मजबूर है। शहरों में यह लोग झुग्गी- झोपड़ियों में, झोपड़पट्टी में, गंदगी के बीच रहते हैं। इनमें तरह-तरह की मजदूरी करने वाले मजदूर तथा फैक्ट्री के दरबान आदि आते हैं। उनकी जिंदगी का यथार्थ चित्र खींचते हुए कवि अरुण कमल ने लिखा है- 'पीछे नाला है / दाहिने मैदान और झाड़ / और आगे नल पर बर्तनों की कतार / चारों तरफ मक्खियां / और तुम्हारे लंबे हाथ सूखे आम्रपल्लव।'[7]

कवि अरुण कमल जी की 'दूसरा आंगन' कविता के पहले उपखंड- 'जब तुम किसी के करीब आते हो' उप-शीर्षक की कविता में अपनी जिंदगी के संघर्ष से जूझता निर्बल-जन 'किसी कटे उदास खेत' की तरह लगता है। इस निर्बल जन को पूंजीवादी ताकतें धन और सत्ता हथियाने के लिए धर्म, जाति या देश में विभाजित करती है। इस विभाजन की राजनीति के लिए जिन लोगों का उपयोग किया जाता है, वे भी निर्बल ही होते हैं। वे अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए पूंजीवादी इशारों से बंटवारे का चाकू चला रहे हैं। जैसे ही यह निर्बल जन, दूसरे निर्बल जन के घर जाता है तो पाता है कि उसके घर में भी वही अभाव, समस्याएं हैं जो यहां वह देख रहा है। इसके घर की फटी चादर, चाय के लिए मंगवाई गई चीनी की एक पुड़िया, पड़ोसी से लाया गया दूध, खांसती हुई मां, प्यारी बच्ची, उसका नन्हा भाई, दहेज के कारण बिन ब्याही बहन और कर्ज में डूबा हुआ निर्बल जन उसे अपने घर की याद दिलाते हैं। और वह अपना चाकू वापस आस्तीन में खोज कर दबे पांव निकल जाता है।'[8] इस कविता के माध्यम से परिस्थितिवश कठोर बने निर्बल वर्ग की संवेदनशीलता का चित्रण किया है।

निर्बल जन की जिंदगी के कई चित्र अरुण कमल की कविता में अंकित है। टीटीई वीरेश चंद्र की स्मृति में लिखी कविता 'आवर्त' में कवि ने रेल से माथे पर लकड़ियों का गट्ठर लेकर जाने वाली औरतें, दिहाड़ी मजदूर और गाकर भीख मांगने वाले साधु फकीर का चित्र उतारते हुए कवि ने लिखा है- 'वे बूढ़ी औरतें माथे पर लकड़ियों का गट्ठर लिए / देखेंगी आसरा तुम्हारा / वे दिहाड़ी मजदूर जिनसे कभी

तुमने टिकट नहीं मांगा। / और वे गाकर भीख मांगने वाले साधु फकीर।'[9]

कवि अरुण कमल की 'महाशक्ति' कविता में बिजली के खंभे को रंगने का काम करने वाले मजदूर की जिंदगी का तथा प्रशासन की क्रूरता का वास्तविक चित्रण किया है। खंभे को रंगने का काम करने वाला मजदूर अंतिम खंभे को रंग रहा है और आज ठेकेदार मजदूरी भी देगा यह सोच कर आनंदित है। परंतु बिजली के करेंट से वह खंभे पर ही चिपक कर मर जाता है। इस यथार्थ दृश्य का कारुणिक चित्रण करते हुए कवि ने लिखा है- 'वह टंगा रहा ऊपर खम्भे पर वैसे ही जैसे कोई / कनकौवा फंसा हो लेकिन कोई फड़फड़ नहीं / 'उसको करेंट मार दिया... दौड़ो।'[10] जब वह खम्भे पर चिपक कर मरता है तो उसे देखने के लिए उसकी बीवी, बच्चे और मां समेत रिक्शे वाले, ठेले वाले आते हैं। परंतु अधिकारी गुस्से में कहता है- 'जल्दी उतारो बेवकूफ को।'[11] मजदूरों में अपनी समान समस्याओं, समान दु:ख, दर्द के कारण कुछ मायने में संगठन भी है। इसी कारण इस घटना पर एक मजदूर कहता है- 'वह हमारा भाई था, हमारा साथी मजूरा।''[12] इस घटना-प्रधान कविता के माध्यम से कवि ने निर्बल वर्ग की जिंदगी की दर्दनाक तस्वीर प्रस्तुत की है।

इस तरह का काम करने वाले सभी असंगठित मजदूर होते हैं। ये लोग किसी यूनियन के सदस्य भी नहीं होते। इनके आगे-पीछे भी कोई नहीं होता। यह दिहाड़ी मजदूर कहलाते हैं। इसी कारण हर कोई इनके साथ अपमान भरा व्यवहार करता है। अगर कहीं काम कर रहे हैं और वहां कुछ चोरी हुई या कुछ गलती हुई तो अक्सर इल्जाम इन दिहाड़ी मजदूरों पर ही डाला जाता है। अरुण कमल की 'खुली मुट्ठी' कविता भी मजदूरों के इसी अपमान से भरे पक्ष को उद्घाटित करती हैं। इस कविता में फ्लैट रंगने का काम करने वाले मजदूरों को एक नौजवान फ्लैट के अंदर घुसता है और उन्हें बाहर खींचता है। और अपनी कार की बड़ी पर पड़ी खरोंच दिखाकर कहता है कि 'यह खरोंच तुमने सायकिल से मारी।'[13] और उनकी दोनों सायकिलें उठाकर बाहर फेंक देता है। इस पर वे काम रोक देते हैं। कवि लिखते हैं कि-'उनकी एक तरह से यह हड़ताल है। ऐसे मजदूरों के लिए उनकी सायकिल सब कुछ होती है।' कवि के शब्दों में- साइकिल उनके लिए पैर थी, बैल थी, घोड़ी थी / कार मोटर जहाज अन्न धन्न थी।'[14] इस तरह से कवि ने मजदूरों के जीवन के सूक्ष्म पहलुओं का मार्मिक चित्रण किया है।

मेहनतकश जिंदगी जीने वाले कई लोग कवि अरुण कमल की कविता में मौजूद हैं। जैसे- सड़क बुहारने वाले, अस्पताल में दवा-दारू करने वाले ब्रदर या नर्स, गोताखोर आदि। कवि के शब्दों में- 'मैं उन्हें खोजता हूं जो रात रहते आए / और बुहार गए मेरी गली / मैं उन्हें खोजता हूं जो रात के दो बजे मेरा ललाट छू / हाथ में नब्ज ले एक खुराक दवा दे चले गए / म म म / अभिनंदन करो उन गोताखोरों का / जो बहती जान को खींच लाए भंवर से।'[15]

इसके अतिरिक्त विदर्भ, तेलंगाना के किसान'[16], शव जलाने का काम करने वाले डोम'[17], माथे पर झाड़-फानूस ढोते मजदूर'[18], आदिवासी[19] आदि मेहनतकश लोग जो अपने निरंतर हो रहे श्रम शोषण के कारण निर्बल बने हुए हैं, कवि उनका पक्ष लेता है। कवि की दृष्टि से राजकवि बनकर रहने से किसी भी कवि को अमरता प्राप्त नहीं होगी। बल्कि मेहनतकशों की बस्ती या गली के टूटे घर में जो नरक है वहीं पर अमरता है- 'चलो फिर वहीं उसी गली के टूटे घर में / जीवन का जो नरक है वही अमरता है।'[20]

इसी कारण कवि अरुण कमल 'गुन गाऊंगा' कविता में लिखते हैं- 'गुन गाऊंगा / होली में घर लौटते / जन मजूर परिवारों के गुन।'[21] कवि अरुण कमल इस निर्बल जन को 'खुदरा' आदमी कहते हैं। यह खुदरा आदमी अपनी पुरानी पैंट को काट कर झोला बनाता है और खरीददारी के लिए निकलता है। खरीददारी में ताजा लौकी, शीशी में पाव भर तेल, नमक, एक पुड़िया चाय और चीनी, नींबू आदि रोजमर्रा की जरूरतों का सामान लाता है। इन लोगों को कोई पूछता नहीं। इन्हें शासन, प्रशासन कोई अहमियत नहीं देता। पूंजीपति थोक कहे जाते हैं और ये गरीब, निर्बल खुदरा। इन लोगों के सामाजिक, राजनीतिक स्थान के संबंध में कवि अरुण कमल लिखते हैं- 'बात ये है भाई मोरे कि मैं खुद एक खुदरा आदमी हूं/ (मोटे लोग थोक होते हैं दुबले खुदरा)/ खुदरा जो भीखमंगों के कटोरे में होता है/वही खुदरा रेजकी चिल्लर टूटा/ एक खुदरा आदमी जो कविता भी खुदरा ही लिखता है/ पर जोहता है बाट विदेशी निवेश का।'[22] इस तरह से अरुण कमल भी अपने आप को खुदरा लोगों के ही बीच का मानते हैं क्योंकि उनकी कविता में भी इस खुदरे लोगों की जिंदगी के खुदरे प्रसंग चित्रित हैं।

उनकी 'घर भी उतनी ही दूर जितना कब्रिस्तान' शीर्षक कविता के चौथे खंड में अनाथों के प्रति सहानुभूति की भावना व्यक्त की है। उनकी 'एक वृद्ध की रात' कविता में मजदूर, दरजिन, आंगनवाड़ी सेविकाएं, किसान की संघर्षशीलता को सलाम किया है। कवि लिखते हैं-'मनेसर के मारुति मजदूरों को सलाम / बंगलुरु की दरजिनों को / बिहार की आंगनबाड़ी सेविकाओं को सलाम / महाराष्ट्र के किसानों को सलाम।'[23] इस प्रकार अरुण कमल की कविता निर्बल जनों के संघर्ष की भी भूरि-भूरि प्रशंसा करती है।

अरुण कमल की 'अभी तैयार नहीं' कविता किसान जीवन के यथार्थ का चित्रण करती है। साहूकार के कर्ज के तले दबे किसान की सच्चाई को अभिव्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है- 'अभी तो दाने बटोरे ही नहीं कि / द्वार पर आकर खड़े हैं / वसूली वाले।'[24]

अरुण कमल की कविता में समाज के सभी क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमजीवी, निर्बल लोग बड़ी सहजता से आ गए हैं। इस संबंध में उनकी 'किस वतन के लोग' शीर्षक कविता के खंड 2 की 'लोकपाल' उपशीर्षक कविता दृष्टव्य है। इस कविता में कवि ने रिक्शा वाला, कूड़ा बीनते बच्चे, मिस्त्री मजदूर, घर में काम करने वाली बाई, आदि की प्रामाणिकता का अत्यंत मार्मिक चित्रण करते हुए उन्हें सलाम किया है- 'उसको सलाम / उस रिक्शे वाले को सलाम / जो कल मेरा छूटा थैला दे गया घर पर / उस कूड़ा बीनते बच्चे की जै / जिसने बम देखा फटने से पहले/ उस मिस्त्री मजदूर को वंदे/ जिसने कहा आप दस टका ज्यादा

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

दे रहे हैं सर/ उस बाई को नमन जिसने गिरी अंगूठी/ ढूंढ़कर दी आज प्रातः।'[25] इस तरह से निर्बल जनों के प्रति अरुण कमल जी के मन में कृतज्ञता का भाव है। इसी कारण अशोक कुमार पांडेय उनकी कविता के संबंध में लिखते हैं- 'वंचित कामगार वर्ग के लिए उनका यह विनीत और कृतज्ञता-भाव उनकी पूरी काव्ययात्रा में बार-बार आया है, लेकिन यहां इस कविता में ही नहीं, बल्कि कई अन्य कविताओं में भी इस कृतज्ञता की जगह एक सहयात्री होने का भाव है।'[26]

अरुण कमल जन पक्षधर कवि हैं। वह अपनी कविता के माध्यम से निर्बलतम का पक्ष लेते हैं। इसलिए वे श्रमजीवी लोगों की बस्ती से गुजरते हैं। उनकी कविता प्रकृति, कल्पना मनोरंजन आदि कलावादी तत्वों का वहन नहीं करती। वे भाट बनकर सांसद, पार्षद या श्रेष्ठजनों के साथ घूमने वाले कवि नहीं हैं। वे आम-निर्बल जनों की बस्ती में घूमने वाले कवि हैं। इस संबंध में उनकी 'कवि थे' शीर्षक कविता उल्लेखनीय है - 'कूड़े के ढेर से गुजरते आज मैं यही सोचता टहल रहा था / कि पीछे से तेज फटफटिया ने कोंचा-हट बे पागल! / काफिला आ रहा था सी.एम. का लाल पीला।'[27] यही कारण है कि कवि अरुण कमल अपनी कविता को हथियार बनाकर निर्बल जन का साथ देते हुए व्यवस्था से लड़ रहे हैं और लड़ना चाहते हैं। उन्हें यह भी पता है कि पूंजीवादी ताकतों से लड़ना बहुत मुश्किल है जिसमें हार ही होगी। लेकिन फिर भी लाखों गरीब, निर्धन, निर्बल लोगों के पक्ष में वे लड़ना चाहते हैं। कवि के शब्दों में- 'चाहे मेरे पक्ष में खड़े हों लाखों गरीब फिर भी ये पैसा है जो/ जीतेगा और हम हारेंगे/ फिर भी लड़ेंगे हर तरह से लड़ेंगे/ खुरपी कुदाल हंसिया ढोल ढपली सिंगा सूप/ ऊंगली पर स्याही की बूंद से/ इन नाखूनों से।'[28] इस तरह से निर्बल जनों को न्याय दिलाने के लिए, आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए कवि हर तरह से लड़ना चाहता है। वह हर तरह से लड़ना चाहता है फिर चाहे वह तरीका लोकतांत्रिक हो या अन्य।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि कवि अरुण कमल की कविता लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्बल वर्ग की जा रही उपेक्षा का पर्दाफाश करती है। नीतियां भले ही इस निर्बल वर्ग के नाम पर बनती हो परंतु बड़ी चालाकी से पूंजीवादी ताकतें अपने हित में उसे कर लेती हैं। निर्बल वर्ग आर्थिक अभाव के चलते अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के लिए पूंजीवादी व्यवस्था पर निर्भर है। उसकी इसी विवशता का फायदा उठाते हुए वह व्यवस्था उसका शोषण करती है। पूंजीवादी व्यवस्था अपने फायदे के लिए निर्बल वर्ग के जीवनयापन विकल्प को भी बड़ी चालाकी से खत्म करती है, इस सत्य को भी अरुण कमल की कविता व्यक्त करती है। कवि अरुण कमल ने निर्बल वर्ग की संवेदनशीलता को व्यक्त करते हुए समाज में श्रमरत विभिन्न निर्बल जन के जीवन के पहलुओं का मार्मिक चित्रण किया है। उनकी कविता निर्बल जन की दयनीय जिंदगी से गुजरती हुई अपनी जनपक्षधरता भलीभांति वहन करती है।

संदर्भ :

1. कमल, अरुण, कविता और समय. नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002, पृ. 232
2. जोशी, राजेश. दो पंक्तियों के बीच, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2004 पृ. 13
3. कमल, अरुण. मैं वो शंख महाशंख. नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ.11
4. वही, पृ. 12
5. वही, पृ. 14-15
6. वही, पृ. 17
7. वही, पृ. 26
8. वही, पृ. 30
9. वही, पृ. 33
10. वही, पृ. 64
11. वही, पृ. 65
12. वही, पृ. 65
13. वही, पृ. 67
14. वही, पृ. 67
15. वही, पृ. 104
16. वही, पृ. 67
17. वही, पृ. 45
18. वही, पृ. 48
19. वही, पृ. 95
20. वही, पृ. 92
21. कमल, अरुण. योगफल, नयी दिल्ली,वाणी प्रकाशन, 2019. पृ. 14
22. वही, पृ. 18
23. वही, पृ. 34
24. वही, पृ. 37
25. वही, पृ. 71
26. महेश्वरी, अशोक कुमार. प्रकाशन समाचार. नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, सितम्बर, 2013 पृ. 16
27. कमल, अरुण. योगफल, नयी दिल्ली,वाणी प्रकाशन, 2019. पृ. 45
28. कमल, अरुण. मैं वो शंख महाशंख. नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ. 82

एमआयबी मंत्री ने बताया ब्लॉक हुये यूट्यूब चैनलों की संख्या

नईदिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 6-A के उल्लंघन को लेकर 'सूचना और प्रसारण मंत्रालय' ने वर्ष 2021 और 2022 में 78 यूट्यूब आधारित न्यूज चैनल्स और उनके सोशल मीडिया खातों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए उन्हें ब्लॉक किया है। सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने लोकसभा में यह जानकारी दी है। इसके साथ ही अनुराग ठाकुर ने बताया कि इसी अवधि के दौरान 'इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय' ने 560 यूट्यूब यूआरएल को ब्लॉक किया है। अनुराग ठाकुर के अनुसार, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 69ए केंद्र सरकार को राष्ट्रीय सुरक्षा, देश की एकता और अखंडता और लोक व्यवस्था आदि के हित में कंटेंट को ब्लॉक करने के लिए किसी भी सरकारी एजेंसी या मध्यस्थ को निर्देश जारी करने का अधिकार देती है।